International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Advanced Studies of Multidisciplinary Research and Analysis – November 2023
Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी की भूमिका

Mr. Dheeraj Kumar Gupta

Assistant Professor, Department of Hindi, Government College, Hindaun City, Rajasthan, India

सार

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के प्रति सकारात्मक प्रवृत्तियां इस प्रकार दिखाई दे रही हैं. भौगोलिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि इसके बोलने-समझने वाले संसार के सब हिंदी का साहित्येतर लेखन बढ़ा है तथा लेखन का स्तर भी ऊंचा होता जा रहा है। का स्वागत और स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है।

परिचय

वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, निजीकरण, उदारीकरण व बाजारवाद में से किसी भी नाम से पुकारिए, भारत में यह प्रक्रिया उन्नीस सौ नब्बे के दशक में आरंभ हुई थी। इस युग में कोई सीमा, कोई सरहद या कोई दीवार नहीं हैं अपितु यह तो पूरे विश्व को एक ग्राम में तब्दील करने की ऐसी अवधारणा है जिसने पूरी दुनिया की तस्वीर ही बदल कर रख दी है वैश्वीकरण की प्रक्रिया आरंभिक दौर में भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हिंदी की तुलना में अंग्रेजी भाषा का महत्व बढ़ा अवश्य था परंतु धीरे-धीरे उसकी गति धीमी होती चली गई। विश्व बाजार व्यवस्था की इस प्रकृति से भारत अछूता नहीं रह सकता था उसे भी वैश्विक मंडी में देर सबेर खड़ा होना ही था। यह भी जग जाहिर है कि वैश्वीकरण ने जहां एक तरफ मुक्त बाजार की दलीलें पेश की वहीं दूसरी तरफ दुनिया में एकक नई उपभोक्ता संस्कृति को भी जन्म दिया आजकल संयुक्त राष्ट्र और विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदी को शुमार करने की ठोस दलीलें दी जा रही हैं। विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी एक ऐतिहासिक परिवर्तन की आहट है परिभाषा प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक नोम चॉमस्की ने वैश्वीकरण का अर्थ अंतराष्ट्रीय एकीकरण माना है इस एकीकरण में भाषा की अहम् भूमिका होगी और जो भाषा व्यापक रूप से प्रयोग में रहेगी, उसी का स्थान विश्व में सुनिश्चित होगा नोम चॉमस्की के अनुसार जब विश्व एक बड़ा बाजार हो जाएगा तो बाजार में व्यापार करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग होगा उसे ही प्राथमिकता दी जाएगी और वही भाषा जीवित रहेगी। वेट्टे क्लेर रोस्सर ने कहा था कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया अचानक ही बीसवीं सदी में नहीं उत्पन्न हुई अपितु दो हजार वर्ष पूर्व भी भारत ने उस समय विश्व के व्यापार क्षेत्र में अपना सिक्का जमाया था जब वह अपने जायकेदार मसालों, खुशबूदार इत्रों एवं रंग बिरंगे कपड़ों के लिए जाना जाता था। ऐसे समय भारत का व्यापार इतना व्यापक था कि रोम की संसद ने एक विधेयक के माध्यम से अपने लोगों के लिए भारतीय कपड़े का प्रयोग निषिद्ध करार दिया ताकि वहां के सोने के सिक्कों को भारत ले जाने से रोका जा सके तभी से भारत की उक्ति वसुधैव कुटुंबकम प्रचलित हुई हमारे लिए वैश्वीकरण का मुद्दा कोई नया नहीं है विश्वस्तर पर सरकारी कामकाज हेतु अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी, रूसी और अरबी भाषाओं को अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का स्थान प्राप्त है। [1,2,3] हिंदी भी संयुक्त राष्ट्र संघ में अंतर्राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्राप्त करने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक भाषा (ग्लोबल लेंग्वेज) के रूप में हिंदी की उपयोगिता को विश्व का व्यापारिक समुदाय अब भली-भांति समझ भी चुका है। आंकड़े दर्शाते हैं कि सवा सौ करोड़ की आबादी वाले इस राष्ट्र में चालीस करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिंदी है। पैंतीस करोड़ से अधिक लोग इस भाषा का प्रयोग दूसरी भाषा के रूप में करते हैं। लगभग तीस करोड़ लोग ऐसे हैं जिनका किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा के साथ सरोकार जुड़ा हुआ है। कहने का आशय यह है कि देश की आबादी के लगभग तीन चौथाई से अधिक लोगों में हिंदी संपर्क का माध्यम है। बाजारवाद और हिंदी वैश्वीकरण का अर्थ व्यापक तौर पर बाजारीकरण है आज मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र बाजारवाद से प्रभावित है। मुक्त व्यापार और वैश्वीकरण के युग में भारत में हिंदी भाषा संप्रेषण का एक बड़ा बाजार है। प्रसिद्ध समाज विज्ञानी प्रोफेसर आनंद कुमार से वैश्वीकरण के आधार तत्वों के रूप में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया, मध्यम वर्ग, बाजार, संचार माध्यम, बहुउद्देशीय कंपनियां, आप्रवासन और संपन्नता नामक सात तत्वों को प्राथमिकता प्रदान की है। इनमें से एक देशी भाषाओं के अनुकूल बाजार और दूसरा संचार माध्यम प्रमुख हैं। बहुभाषिक समाज व्यवस्था वाले भारत में हिंदी को वैश्विक बाजार ने संपर्क व व्यवहार की भाषा के रूप में अपनाया भारत दुनियाभर के उत्पाद निर्माताओं के लिए एक बड़ा खरीदार और उपभोक्ता बाजार है। दुनिया अब भली भांति इस बात को पहचान चुकी है कि यदि विशाल आबादी वाले भारतीय मध्यमवर्गीय बाजार तक उसे अपनी पहुंच बनानी है तो हिंदी को अपनाना ही होगा। आज बहुराट्रीय और देशी कंपनियों की लगभग सत्तर प्रतिशत से अधिक वस्तुएं हिंदी के माध्यम से जनमानस तक हंच रही हैं। वैश्वीकरण में आर्थिक और सास्कृतिक दोनों दृष्टि से हिंदी की भूमिका बढ़ी है नई बाजार संस्कृति अब तक स्वायत्त रहे समाजों और संस्कृतियों के रहन-सहन, आचार-विचार, भाषा-भूषा और मूल्यबोध सभी का अपने तरीके से अनुकूलन कर रही है। बाजारीकरण की व्यवस्था में हिंदी भाषा इसका माध्यम बनकर उभरी है। प्रिंट एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया और हिंदी टेलिविजन पर प्रसारित कार्यक्रम चाहे किसी भी विषय से संबंधित हों उन्हें व्यावसायिकता की दृष्टि से हिंदी एक बहुत बड़ा क्षेत्र उपलब्ध कराती है। टेलीविजन ने इस तरह हिंदी के भाषा वैविध्य और संप्रेषण क्षमता को सर्वथा नई दिशाएं प्रदान की हैं। वैश्वीकरण के इस सघन और उत्कट समय में मीडिया को वर्चस्वशाली भाषा और उच्च तकनीकी विकास का स्त्रोत तथा आधुनिकता के मूल्यों का वाहक

माना जा रहा है। विज्ञापनों की भाषा और प्रमोशन वीडियो की भाषा के रूप में सामने आने वाली हिंदी शुद्धतावादियों को भले ही न पच रही हो, युवा वर्ग ने उसे देश भर में अपने सक्रिय भाषा कोष में शामिल कर लिया है। यह हिंदी का ही कमाल है कि आज राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों को हम गांवों में प्राप्त कर सकते हैं समाचार पत्रों टी वी की विज्ञापन संस्कृति का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। आजकल साबुन और टूथपेस्ट जैसी दैनंदिन उपयोग की वस्तुओं से आगे चलकर अब मोटर साईकिल, कार, फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन, ब्रांडेड कंपनियों के कपड़े आदि के विज्ञापन हिंदी में प्रसारित किए जा रहे हैं। छोटे-छोटे कस्बों तक सौंदर्य प्रसाधन के ब्यूटी पार्लर खुल चुके हैं। सैलून जैसे अब गजरे जमाने का शब्द लगने लगा है बड़े-बड़े होर्डिंग्स पर हिंदी में लिखे लोक लुभावन विज्ञापनों और नारों ने शहरी सीमा को लांघकर कस्बों और गांवों में जगह बना ली है टी वी और मोबाइल से शायद ही अब देश का कोई कोना अछूता बचा होगा। वैश्वीकरण बाजार के विकास और विस्तार में प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक माडिया पर प्रसारित विज्ञापनों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। अभिव्यक्ति कौशल के विकास का अर्थ भाषा का विकास ही है बाजारीकरण ने आर्थिक उदारीकरण, सूचनाक्रांति तथा जीवन शैली के वैश्वीकरण की जो स्थितियां भारत की जनता के सामने रखी, इसमें संदेह नहीं कि उनमें पड़कर हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति कौशल का विकास ही हुआ। आज प्रचार माध्यमों की भाषा हिंदी होने के कारण वे भारतीय परिवार और सामाजिक संरचना की उपेक्षा नहीं कर सकते विज्ञापनों से लेकर धारावाहिकों तक में हिंदी अपनी जड़ों से जुड़ी हुई है आरंभ में मीडिया में छोटे पर्दे और बड़े पर्दे पर स्टार टी वी लाए तो उन्हें एहसास हुआ कि अंग्रेजी माध्यम से बढ़िया प्रोग्राम भी शहरी वर्ग के इलीट क्लास तक ही सीमित हैं। परंतु ज्योहिं स्टार टीवी ने हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करने आरंभ किए तो उसके दर्शकों में बेतहाशा वृद्धि हुई भारत में अब डिस्कवरी, सोनी, कलर, आज तक, एनडीटीवी, जी टीवी आदि अनोकानेक चैनल हिंदी में अपने कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। [4,5,6] आज की परिस्थितियों में समाचार विश्लेषण तक में कोड मिश्रित हिंदी का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है। पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, पारिवारिक, जासूसी, वैज्ञानिक और हास्य प्रधान अनेक प्रकार के धारावाहिकों का प्रदर्शन विभिन्न चैनलों पर जिस हिंदी में किया जा रहा है उसमें विषय संदर्भित व्याहारिक भाषा रूपों और कोडों का मिश्रण किया जाता है जिस सहज ही जनस्वीकृति मिल रही है। हिंदी पत्रकारिता में सुविधा ने बाजारी व्यवस्था प्रकार का साहित्य प्रचुर शिक्षा और परस्पर व्यवहार इंटरनेट और वेबसाइट की पूर्णरूप से ऑनलाइन पत्र दरवाजे खोल दिए हैं यही हिंदी पत्रकारिता में डिजिटल तकनीकी और बरंगे चित्रों के प्रकाशन की सुविधा ने बाजारी व्यवस्था को परिवर्तित कर दिया है। आज हिंदी में विविध प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है तथा मनोरंजन, ज्ञान, शिक्षा और परस्पर व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में उसका विस्तार हो रहा है इंटरनेट और वेबसाइट की सुविधा ने पत्र व पत्रिकाओं के ई संस्करणों तथा पूर्णरूप से ऑनलाइन पत्र व पत्रकाओं को उपबल्ध कराकर सर्वथा ई दुनिया के दरवाजे खोल दिए हैं यही कारण है कि आज हिंदी की अनेक पत्रिकाएं इस रूप में कहीं भी और कभी भी सुलभ हैं तथा इंटरनेट पर हिंदी में अब हर प्रकार की जानकारी प्राप्त हो रही है। कंप्यूटर युग में अनुवाद कार्य का विस्तार कंप्युटर युग में विश्व और सिकुड़ गया है। अब घर बैठे विश्व में कहीं भी संपर्क स्थापित किया जा सकता है वैश्वीकरण के इस दौर में अनुवाद के कार्य का विस्तार दिनौदिन बढ़ता जा रहा है। वह दिन दूर नहीं जब तकनीक के आदान-प्रदान में अनुवाद अपनी विशेष भूमिका अदा कर पाएगा इंटरनेट के माध्यम से हिंदी की विभिन्न वेबसाइट, चिट्ठाकार और अनेकानेक सामग्री उपलब्ध हो रही है। यूनिकोड के माध्यम से कंप्युटर पर अब किसी भी भाषा में कार्य करना न केवल सरल ही हो गया है अपितु जिस भाषा में हम अपने सिस्टम पर सामग्री तैयार करते हैं उसे विश्व के किसी भी कोने में न केवल यथावत पा ही सकते हैं अपितु इच्छानुसार परिवर्तित भी कर सकते हैं आज हिंदी के स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकृति में बदलाव आया है। आज हिंदी समूचे भूमंडल की एक प्रमुख भाषा के रूप में उभरी है आज की बदलती परिस्थितियों में हिंदी भाषियों और भारत की शक्ति के नाते ही सही अमेरीकी सरकार के साथ साथ कम्प्यूटरक किंग कहे जाने ववाले बिल गेट्स भी हिंदी के उपयोग में दिलचस्पी दिका रहे हैं गूगल के मुख्य अधिकारियों का मानना है कि भविष्य में स्पेनिश नहीं बल्कि अंग्रेजी और चीनी के साथ हिंदी ही इंटरनेट की प्रमुख भाषा होगी। आजकल गूगल के माध्यम से अंग्रेजी भाषा से हिंदी भाषा में स्पीच से सीधा अनुवाद भी उपलब्ध होने लग गया है गूगल सॉफ्टवेयर से अंग्रेजी डाक्यूमेंट को हिंदी भाषा में तुरंत अनुदित करने की सुविधा उपलब्ध हो गई है। [7,8,9]

विचार-विमर्श

जिस भाषा में इंसान सबसे पहले बोलना सीखता है वही उसकी मातृभाषा होती है यानी माँ की गोद की भाषा को मातृभाषा कहते हैं। दादी-नानी के द्वारा सुनाई जानी वाली लोरियों की भाषा और बाल्यावस्था के दौरान मित्र समूहों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। भारतीय संविधान में मात्र 22 भाषाओं का जिक्र है जबकि मात्र छह भाषाओं (तमिल, संस्कृत, कन्नड़, तेलुगू, मलयालम और ओडिया) को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। हमारे देश की विविधता के कारण ही किसी भी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं दिया गया है। भाषा के महत्व को देखते हुए ही वर्ष 1964-66 में कोठारी आयोग ने 'त्रि-भाषा सूत्र' दिया था।

भारत न केवल भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से विविधता को समेटे हुए है बल्कि भाषाई दृष्टिकोण से भी काफी समृद्ध है। वर्ष 1961 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 1652 भाषाएँ थीं। शायद इसीलिए मातृभाषा पर एक कहावत खूब प्रचलित हुई "कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी।" लेकिन कभी-कभी लगता है कि वैश्वीकरण ने पहनावा-ओढ़ावा, खान-पान, साहित्य-सिनेमा के साथ-साथ भाषाई तौर पर भी हमें एकरूपता की तरफ जबरदस्ती धकेला है। अंग्रेजी अथवा अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं की वैश्विक पटल पर मौजूदगी किसी से छिपी हुई नहीं है।

वैश्वीकरण ने मातृभाषा के लिए कई चुनौतियाँ खड़ी की हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि मशीन की भाषा ही आजकल उद्योग जगत को पसंद है। ऑनलाइन युग में अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का बोलबाला है। शोध, अनुसंधान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उन भाषाओं को सबसे

ज्यादा तवज्जो दी जा रही है जो मशीन और तकनीक के लिए अनुकूल हैं। नौकरी की भाषा भी मातृभाषा से शिफ्ट होकर अंग्रेजी हो चुकी है। अंग्रेजी से कोई घृणा नहीं है किंतु यदि मातृभाषा में ही नौकरी के कौशल सीख लिए जाए तो कितना अच्छा होगा![10,11,12]

वैश्वीकरण के कारण मातृभाषा पर संकट मंडराने की खबर कोई नहीं है; वर्ष 1961 में भारत में भाषाओं की कुल संख्या आधिकारिक रूप से 1652 थीं लेकिन 1971 में यह घटकर मात्र 808 रह गई। भारतीय लोकभाषा सर्वेक्षण 2013 के आँकड़े को मानें तो पिछले 50 वर्षों में 220 भाषाएँ लुप्त हो गई हैं और 197 भाषाएँ लुप्त होने की कगार पर हैं। व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव, पारंपरिक बसावट में कमी और पूँजीवाद के दौर में रोज़गार के प्रारूप में परिवर्तन ने मातृभाषाओं को पतन की ओर ले गया है। इसके बावजूद यदि मातृभाषा की चमक कायम है तो कुछ तो बात है कि इसकी हस्ती मिटती नहीं है!

मौलिक चिंतन और रचनात्मक लेखन अधिकांशतः मातृभाषा में ही संभव हो पाता है। यही कारण है कि विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य और सिनेमा आए दिन सुर्खियाँ बटोरते रहते हैं। दरअसल अर्जित भाषाओं में कल्पना करना और उन कल्पनाओं को लिपिबद्ध करना मातृभाषाओं की तुलना में कठिन है। मातृभाषा को लोकभाषा इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि यह जन-जन से सीधे जुड़ी हुई होती है। यह वह धरोहर है जिसका कोई विकल्प नहीं है। मातृभाषा में संवाद स्थापित करके संप्रेषण को प्रभावपूर्ण बनाना कोई नई कला नहीं है। नेल्सन मंडेला कहते हैं कि "यदि आप किसी से ऐसी भाषा में बात करें, जो वह समझ सकता है तो वह उसके मस्तिष्क में जाती है। लेकिन यदि आप उसकी अपनी भाषा में बात करते हैं, तो वह सीधे उसके हृदय को छूती है।" इसलिए आजकल मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में टीचिंग-लर्निंग पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बच्चे जिस भाषा में बचपन को जीता है उसी भाषा में वह पढ़ाई को भी एन्जॉय करेगा। पढ़ाई कोई बोझिल कार्य न लगे इसके लिए मातृभाषा को टीचिंग-लर्निंग की भाषा के रूप में स्वीकारा जा रहा है।[2,3]

दरअसल भाषा पुल का कार्य करती है; जानकारी, अवधारणा और ज्ञान को एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क में पहुँचाती है। जिस प्रकार यदि पुल मजबूत न हो तो दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है उसी प्रकार यदि भाषा पर पकड़ मजबूत न हो तो विषयों पर मास्टरी हासिल नहीं हो पाती है। अर्थ का अनर्थ तभी होता है जब भाषा पर पकड़ कमजोर होती है। यह सर्वज्ञात है कि सबकी अपनी-अपनी मातृभाषा पर पकड़ मजबूत होती है। इसलिए भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में इसका प्रावधान किया गया है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जाए। इससे बच्चों के सर्वांगीण विकास का रास्ता आसान हो जाएगा।

गौरतलब है कि मातृभाषा में अध्ययन का सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर पड़ता है। पढ़ाई में रूचि, अमूर्त विषयों को मूर्त रूप में तब्दील करने की शक्ति, विषयवस्तुओं को याद रखने की क्षमता, आत्मविश्वास का विकास, कक्षा में विद्यार्थियों की अच्छी उपस्थिति और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का संबंध मातृभाषा से है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने भी इस बात को स्वीकार किए हैं कि मातृभाषा से ही शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन होगा।

अतः विभिन्न कोशिशों के बाद मातृभाषा को टीचिंग-लर्निंग की भाषा के रूप में स्वीकारा जा रहा है। क्योंकि करके सीखने की प्रक्रिया में मातृभाषा का खूब योगदान है। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में मातृभाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मातृभाषा में पढ़ते हुए विद्यार्थियों को कमतर नहीं आँकना चाहिए। तकनीकी शिक्षा भी मातृभाषा में देनी चाहिए। मातृभाषा का विस्तार इंटरनेट की भाषा के रूप में होनी चाहिए। मातृभाषा को सभी विद्यार्थी लर्निंग की भाषा के रूप में स्वीकार करे, इसके लिए मातृभाषा में रोजगार के अवसर भी सृजित होने चाहिए। और शिक्षण के दौरान शिक्षकों को मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में संवाद स्थापित करते हुए हीन भावना से ग्रसित नहीं होना चाहिए। अब तो कुछ इंजीनियरिंग कॉलेज, मैनेजमेंट संस्थान और मेडिकल कॉलेज भी हिंदी में टीचिंग-लर्निंग कार्य कर रहे हैं।

भारत जैसे विशाल उपभोक्ता वाले देश में अब मातृभाषा को संसाधन के रूप में देखा जा रहा है। इंटरनेट की दुनिया से लेकर साहित्य, मनोरंजन और पत्रकारिता की दुनिया तक में लोकभाषा में विभिन्न प्रकार के मौलिक कंटेंट मुहैया कराए जा रहे हैं। कुछ नया कहने, लिखने और दिखाने की भाषा के रूप में जन-जन की भाषा का प्रभावशाली उपयोग हो रहा है। इससे रोजगार के अवसर भी पैदा हो रहे हैं और मातृभाषा का उत्थान भी हो रहा है। क्षेत्रीय भाषाओं के सिनेमा का डंका खूब बज रहा है। अनेकों न्यूज़ चैनल क्षेत्रीय भाषाओं में ग्राउंड रिपोर्टिंग कर रहे हैं। यानी संप्रेषण की असल खुशबू मातृभाषा से आती है। जुड़ाव, लगाव और अपनापन का भाव अपनी ही भाषा में महसूस होता है।

मातृभाषा को टिकाऊ बनाए रखने के लिए इस भाषा में शोध कार्य किए जाने की आवश्यकता है। वैश्वीकरण को अवसर के रूप में देखते हुए मातृभाषा का दरवाजा विज्ञान, कला, शोध, पत्रकारिता, शिक्षा और मनोरंजन के लिए खोल देना चाहिए। ध्यान इस बात की रखना है कि अंतर्राष्ट्रीय भाषा मातृभाषा को कहीं निगल न जाए! हमें अतीत से सचेत होना चाहिए और सधा हुआ कदम बढ़ाकर विभिन्न मातृभाषाओं को विलुप्त होने से बचाना चाहिए। एक भाषा का विलुप्त होना अनेकों बहुमूल्य धरोहरों का विलुप्त होने जैसा है। मानव सभ्यता में विभिन्न प्रकार की विविधताएँ दुनिया को रंग-बिरंगी बनाती हैं। मातृभाषाओं का गायब हो जाना इंद्रधनुष का बेरंग हो जाना है। महात्मा गांधी कहते हैं कि "राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा में नहीं बल्कि किसी अन्य भाषा में शिक्षा पाते हैं, वे आत्महत्या करते हैं। इससे उनका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जाता है।"

तकनीकी शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करके ही शिक्षा को असल में समावेशी बनाया जा सकता है। अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करके जापान, फ्रांस तथा जर्मनी ने विकसित देश का तमगा कैसे हासिल किया यह किसी से छुपा हुआ नहीं है। भारत को अपनी मातृभाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए इन देशों द्वारा अपनाए गए तरीकों और नीतियों से सीखना चाहिए। वैसे आजकल कुछ

इंजीनियरिंग कॉलेज, मैनेजमेंट संस्थान और मेडिकल कॉलेज में हिंदी में अध्ययन-अध्यापन शुरू हो गया है। इसका दूरगामी सकारात्मक प्रभाव भविष्य में ज़रूर देखने को मिलेगा।[5,6]

समय की माँग है कि मातृभाषा का न सिर्फ एक विषय के रूप में प्रचार प्रसार करें बल्कि प्रशासन और न्यायालयों सहित सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में मातृभाषाओं के प्रयोग को प्रोत्साहित करें। दरअसल एक लोकतंत्र के रूप में यह जरूरी है कि शासन में आम नागरिकों की भागीदारी हो। वह तभी होगा जब शासन की भाषा उनकी अपनी मातृभाषा होगी। यदि न्यायपालिका की कार्यवाही भारतीय भाषाओं में होगी तो लोग न्यायपालिका को अपना पक्ष अपनी भाषा में समझा सकेंगे और उसके निर्णयों को पूरी तरह समझ सकेंगे। इससे न्याय तक सबकी पहुँच संभव हो सकेगी।

लोकतंत्र में नागरिकों की भागीदारी, बच्चों का सर्वांगीण विकास, समावेशी शिक्षा और विभिन्न विविधताओं का संरक्षण लोकभाषा से संभव हो सकेगा। लोक भावनाएं, लोक कला, लोक साहित्य और लोक संस्कृति जैसे मुद्दों का सीधा जुड़ाव लोकभाषा यानी मातृभाषा से है। भारत में गुलामी के दौरान से मातृभाषाओं का दमन शुरू हो गया था। अंग्रेजों की नितियाँ भारतीयता को खत्म करने की थी। भारतीयता से यहाँ आशय संस्कार, मौलिकता, मातृभूमि से प्रेम और सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को बनाए रखने से है, इसमें मातृभाषा पुल का कार्य करती है। इसलिए अंग्रेज इस पुल को नेस्तनाबूद करने में डटे रहे। आज़ादी के बाद भी स्थितियाँ बहुत नहीं बदली हैं। एक भारतीय के रूप में यह हमारी असफलता ही है कि हम अपनी मातृभाषाओं को शासन, प्रशासन और राष्ट्रीय जीवन में उचित स्थान न दिला पाए। भारतीय भाषाओं को रोजगार और आजीविका से जोड़कर मातृभाषा को ताकत दे सकते हैं।

परिणाम

वैश्वीकरण विभिन्न देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण, सहयोग और विचारों, संस्कृति, प्रौद्योगिकी और अर्थव्यवस्थाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। वैश्वीकरण के साथ, दुनिया एक वैश्विक गांव बन गई है, और लोग आसानी से एक दूसरे के साथ बातचीत और संवाद कर सकते हैं। वैश्वीकरण के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक भाषा का प्रसार है, और हिंदी इसका अपवाद नहीं है। हिंदी भारत में व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, और यह विश्व स्तर पर तेजी से लोकप्रिय हो रही है।

500 मिलियन से अधिक हिंदी भाषी के साथ हिंदी दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह अंग्रेजी के साथ-साथ भारत की आधिकारिक भाषा है, और नेपाल, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद और टोबैगो जैसे अन्य देशों में भी बोली जाती है। इस निबंध में, हम दुनिया में हिंदी की स्थिति, इसके इतिहास, स्थिति और प्रभाव, हिंदी भाषा के वैश्वीकरण, और इसके सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा करेंगे।

हिंदी भाषा का इतिहास

हिंदी एक इंडो-आर्यन भाषा है जो संस्कृत से उत्पन्न हुई है। प्राकृत भाषा से विकसित हुई है, जो प्राचीन भारत में बोली जाने वाली एक बोली है। हिंदी के प्रारंभिक रूप अपभ्रंश और शौरसेनी थे। मध्ययुगीन काल के दौरान, हिंदी दो अलग-अलग रूपों में विकसित हुई: स्थानीय बोली और खड़ी बोली। इन्हीं रूपों ये हिंदी का मानक रूप बन गया।[8,9]

हिंदी भाषा का एक वृहद और समृद्ध इतिहास है, जो 7वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह प्राचीन भाषा संस्कृत से विकसित हुई है, जिसका उपयोग लगभग 2000 साल पहले भारत में किया गया था। समय के साथ, फ़ारसी, अरबी और तुर्की के प्रभाव से हिंदी अपनी अलग भाषा के रूप में विकसित हुई।

मुगल साम्राज्य के दौरान, जिसने 16वीं से 18वीं शताब्दी तक भारत के अधिकांश हिस्सों पर शासन किया, हिंदी साहित्य और कविता के लिए एक लोकप्रिय भाषा बन गई। इस समय के दौरान हिंदी साहित्य की कई प्रसिद्ध रचनाएँ लिखी गईं, जिनमें तुलसीदास की रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली, पार्वती मंगल, गीतावली तथा सूरदास का सूरसागर, केशवदास की कवि प्रिया, रसिक प्रिया और अलंकार मंजरी आदि प्रमुख है ।

19वीं सदी में, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों द्वारा हिंदी को प्रशासन की भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा। अंग्रेजों ने अंग्रेजी को एक आधिकारिक भाषा के रूप में भी प्रस्तुत किया, जिसके कारण अंततः भारत में द्विभाषी प्रणाली को अपनाया गया।

1947 में भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता मिलने के बाद हिंदी भारत की आधिकारिक भाषा बन गई। भारतीय संविधान ने हिंदी को देश की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी। हालाँकि, हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी भी एक आधिकारिक भाषा के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

हिंदी भाषा की स्थिति

आज, अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी भारत की आधिकारिक भाषा है। यह अधिकांश आबादी द्वारा बोली जाती है, विशेष रूप से देश के उत्तरी और मध्य क्षेत्रों में। हालाँकि, भारत में कई क्षेत्रीय भाषाएँ भी बोली जाती हैं, जैसे बंगाली, तमिल और तेलुगु आदि।

भारत सरकार ने आधिकारिक संदर्भों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए हैं। उदाहरण के लिए, सरकारी दस्तावेजों और संचार को हिंदी और अंग्रेजी दोनों में लिखा जाना, और हिंदी को स्कूलों में एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाना शामिल है।

इन प्रयासों के बावजूद, आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग को लेकर कुछ तनाव हैं। कुछ गैर-हिंदी भाषी राज्यों, जैसे कि तमिलनाडु, ने यह तर्क देते हुए कि यह देश के बाकी हिस्सों पर उत्तर भारतीय संस्कृति को थोपने का प्रयास है, हिंदी को थोपने का विरोध किया है

हिंदी भाषा का प्रभाव

दुनिया भर की अन्य भाषाओं और संस्कृतियों पर हिंदी का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए, हिंदी फिल्में, जिन्हें बॉलीवुड फिल्मों के रूप में भी जाना जाता है, कई देशों में बेहद लोकप्रिय हैं, खासकर दक्षिण एशिया और मध्य पूर्व में।

हिंदी ने भारत में अन्य भाषाओं के विकास को भी प्रभावित किया है। कई भारतीय भाषाओं ने विशेष रूप से साहित्य और लोकप्रिय संस्कृति के क्षेत्रों में हिंदी से शब्द और वाक्यांश लिए हैं।

इसके अलावा, हिंदी ने हिंदुस्तानी भाषा के विकास को प्रभावित किया है, जो पाकिस्तान और अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। हिंदुस्तानी एक संकर भाषा है जो हिंदी और उर्दू के तत्वों को जोड़ती है, जो पाकिस्तान की आधिकारिक भाषा है।

हिंदी भाषा का महत्व

500 मिलियन से अधिक वक्ताओं के साथ हिंदी भारत में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। यह भाषा अंग्रेजी, चीनी और स्पेनिश के बाद विश्व स्तर पर चौथी सबसे अधिक प्रचलित भाषा है। चीनी के बाद हिंदी विश्व की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। हिंदी भारत, फिजी और मॉरीशस में एक आधिकारिक भाषा है। नेपाल में, हिंदी को एक माध्यमिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। हिंदी के व्यापक उपयोग ने इसे दक्षिण एशिया और उसके बाहर व्यापार, वाणिज्य और संचार के लिए एक महत्वपूर्ण भाषा बना दिया है।

हिंदी भाषा का वैश्वीकरण

वैश्वीकरण ने हिंदी भाषा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी विश्व स्तर पर तेजी से लोकप्रिय हो रही है, खासकर उन देशों में जहां भारतीय समुदाय मौजूद हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रवासी भारतीयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जो भारतीय दूसरे देशों में चले गए, खासकर उत्तरी अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में, वे अपने साथ हिंदी ले गए, जिससे भाषा का विश्व स्तर पर प्रसार हुआ।

विश्व स्तर पर भारतीय फिल्मों, संगीत और साहित्य के प्रभाव से हिंदी की लोकप्रियता को सहायता मिली है। बॉलीवुड फिल्में, जो हिंदी भाषा की फिल्में हैं, कई देशों में तेजी से लोकप्रिय हो गई हैं। इन फिल्मों की लोकप्रियता ने गैर-भारतीयों के बीच हिंदी भाषा में रुचि बढ़ाई है। भारतीय संगीत उद्योग, जो हिंदी सहित विभिन्न भाषाओं में संगीत का उत्पादन करता है, ने भी विश्व स्तर पर हिंदी भाषा के प्रसार में योगदान दिया है। हिंदी साहित्य सहित भारतीय साहित्य भी भाषा के प्रचार-प्रसार में प्रभावशाली रहा है।

अकादमिक और शैक्षिक पहलों के माध्यम से भी हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया गया है। दुनिया भर में कई विश्वविद्यालय और संस्थान हिंदी भाषा पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। इससे गैर-हिन्दी भाषियों के लिए हिंदी सीखना और बोलना संभव हो गया है।

हिन्दी का वैश्विक प्रभाव

हिंदी का वैश्विक प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है, जिनमें शामिल हैं:

राजनीति

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, और हिंदी इसकी आधिकारिक भाषा है। भारतीय राजनीति में हिंदी के प्रयोग का उसके घरेलू और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। भारत सरकार संचार और प्रशासन के लिए अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में हिंदी का उपयोग करती है। भारतीय संसद अपनी कार्यवाही हिंदी और अंग्रेजी में करती है, और सभी कानून और विनियम दोनों भाषाओं में प्रकाशित होते हैं।

विदेश नीति

हिंदी भारत की विदेश नीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की भाषा है, जिसमें अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं। सार्क बैठकों में हिंदी का उपयोग राजनयिक भाषा के रूप में किया जाता है, जो सदस्य देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने में मदद करता है। संयुक्त राष्ट्र और गुटनिरपेक्ष आंदोलन जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी हिंदी का उपयोग किया जाता है, जहाँ यह भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता का प्रतिनिधित्व करती है।

संस्कृति

हिंदी की एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, जिसका वैश्विक प्रभाव है। बॉलीवुड, भारतीय फिल्म उद्योग, हिंदी में फिल्मों का निर्माण करता है, जिन्हें दुनिया भर में लाखों लोग देखते हैं। बॉलीवुड की लोकप्रियता ने विश्व स्तर पर हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने में मदद की है। बॉलीवुड फिल्मों में संगीत और नृत्य क्रम भी लोकप्रिय हैं, और कई पश्चिमी संगीतकार और कलाकार हिंदी संगीत से प्रभावित हुए हैं। बॉलीवुड, हिंदी फिल्म उद्योग, उत्पादित फिल्मों की संख्या के हिसाब से दुनिया का सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है, और इसके वैश्विक दर्शक वर्ग हैं।

साहित्य

हिन्दी साहित्य भी भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। कई हिंदी लेखकों ने प्रतिष्ठित साहित्य पुरस्कार जीते हैं, जिनमें साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार शामिल है। हिंदी साहित्य का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है, और इसने विश्व स्तर पर भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने में मदद की है।

धर्म और आध्यात्म

हिंदी धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है। हिंदी दुनिया के प्रमुख धर्मों में से एक हिंदू धर्म की संस्कृत के साथ एक अधिकारिक भाषा है। वेदों और भगवद गीता सहित हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं, जो हिंदी से निकटता से जुड़ी भाषा है। भारत के कई आध्यात्मिक संत और गुरु अपने अनुयायियों को पढ़ाने के लिए हिंदी का उपयोग करते हैं।[10,11]

योग, भारत से उत्पन्न एक आध्यात्मिक अभ्यास है, जिसे अधिकतर हिंदी में सिखाया जाता है। मंत्रों का उपयोग ध्यान और आध्यात्मिक प्रथाओं में भी किया जाता है। योग और ध्यान की लोकप्रियता ने विश्व स्तर पर हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने में मदद की है।

व्यवसाय

भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, और हिंदी ने अपने व्यापार क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी भारत में वाणिज्य की भाषा है, और कई व्यापारिक लेनदेन

हिंदी में किए जाते हैं। व्यवसाय में हिन्दी के प्रयोग से विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने में मदद मिली है। कई भारतीय कंपनियों की महत्वपूर्ण वैश्विक उपस्थिति है, और उनके संचार और ब्रांडिंग में हिंदी के उपयोग ने हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने में मदद की है। भारतीय व्यंजनों और फैशन की लोकप्रियता ने विश्व स्तर पर हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने में भी मदद की है।

शिक्षा

हिंदी भारत में शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा है। हिंदी को स्कूलों में प्रमुख भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है, और कई विश्वविद्यालय हिंदी साहित्य और भाषा में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। भारत सरकार भी विश्व स्तर पर हिंदी शिक्षा को बढ़ावा देती है, और संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम सहित कई देश अपने विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। हिंदी भाषा और संस्कृति की लोकप्रियता के कारण दुनिया भर में हिंदी भाषा के स्कूलों और सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना भी हुई है। ये संस्थान हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देते हैं और हिंदी बोलने वालों को जुड़ने और सीखने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष अंत में, हिंदी भाषा का राजनीति सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण वैश्विक प्रभाव है, कुल मिलाकर, हिंदी का प्रभाव कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, और वैश्विक मंच पर भारत का प्रभाव बढ़ने के साथ ही इसका महत्व बढ़ने की संभावना है।

हिंदी भाषा के वैश्वीकरण के सामने चुनौतियाँ

हिन्दी भाषा के वैश्वीकरण के सामने कई समस्याएं एवं चुनौतियों जिनमें प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार है-

मानकीकरण की कमी

हिंदी भाषा के वैश्वीकरण को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक भाषा के मानकीकरण की कमी है। भारत बहुभाषायी देश है इस कारण हिंदी में कई बोलियाँ हैं, और भाषा का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है, इस प्रभाव के कारण विश्व स्तर पर हिन्दी में मानकीकरण का दोष निरूपित करते है,क्योंकि इससे गैर-देशी वक्ताओं के लिए हिंदी सीखना और बोलना मुश्किल हो जाता है। सबसे बड़ी बात, हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग ने भाषा को कम मानकीकृत बना दिया है। भारत में ही शुद्ध हिन्दी बोलने वालों को आश्चर्य की तरह देखा जाता है ।

लिखित हिंदी के लिए कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत मानक न होना और विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के स्वयं की देवनागरी लिपि होने के बाद भी अन्य लिपियों विशेष कर रोमन लिपि का प्रयोग किया जाना हिन्दी को अमानकीकृत भाषा होने का भ्रम पैदा कर सकता है और हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में इस्तेमाल करना कठिन बना सकता है।

सरकारी समर्थन की कमी

हिंदी भाषा वैश्वीकरण के सामने एक और चुनौती सरकारी समर्थन की कमी है। जबकि हिंदी को भारत में आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है, इसके बाद भी सरकार ने विश्व स्तर पर भाषा को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त उपाय नहीं किए हैं। भारत सरकार को दुनिया भर के विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिंदी भाषा के कार्यक्रमों को वित्तपोषित करने जैसी पहलों के माध्यम से विश्व स्तर पर हिंदी भाषा के प्रचार में निवेश करने की आवश्यकता है।

युवा पीढ़ी में हिंदी के प्रति रुचि की कमी

युवा पीढ़ी में हिंदी के प्रति रुचि की कमी भी एक चुनौती है। वैश्विक भाषा के रूप में अंग्रेजी की लोकप्रियता युवा पीढ़ियां में अधिक हैं। अंग्रेजी को वैश्वीक व्यपारिक भाषा के रूप में प्रचारित करके रोजगार की कामना से बच्चों को अंग्रजी माध्यम के स्कूल में पढ़ाया जाना रूचि में कमी का प्रमुख कारण है। हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी बोल कर युवा पीढ़ी अपने आप को अधिक शिक्षित और सभ्य समझने की भूल कर रही है ।

सीमित अंतरराष्ट्रीय मान्यता:

यद्यपि हिंदी भारत और कुछ अन्य देशों में व्यापक रूप से बोली जाती है, फिर भी इसकी अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में सीमित मान्यता है, विशेष रूप से व्यापार और शैक्षणिक दुनिया में।

अंग्रेजी का प्रभुत्व:

अंग्रेजी वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय संचार की प्रमुख भाषा है, और दुनिया भर में कई लोग इसे हिंदी के बजाय दूसरी भाषा के रूप में सीखते हैं।

भाषा संसाधनों की कमी:

हिंदी सीखने वालों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले भाषा संसाधनों, जैसे पाठ्यपुस्तकों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और शब्दकोशों की कमी भी हिन्दी के वैश्वीकरण में बाधक है ।

वैश्विक मीडिया तक सीमित पहुंच:

हिंदी-भाषी मीडिया, जैसे कि बॉलीवुड फिल्में और टीवी शो, मुख्य रूप से हिंदी-भाषी दर्शकों द्वारा उपभोग किए जाते हैं, जो वैश्विक दर्शकों के लिए भाषा के प्रदर्शन को सीमित करता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सीमित उपयोग:

कई वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द अभी तक हिंदी में मानकीकृत नहीं हुए हैं, जिससे इन क्षेत्रों में भाषा का उपयोग करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

सीमित धन:

हिंदी भाषा के कार्यक्रमों और संसाधनों को पर्याप्त धन प्राप्त नहीं हो रहा है, जो वैश्विक स्तर पर उनके विकास और वितरण में बाधाक है।

हिंदी भाषा के वैश्वीकरण की चुनौतियों से उबरने के उपाय

हिंदी भाषा के वैश्वीकरण की चुनौतियों से पार पाने के लिए यह उपाय करना ही होगा-

- मानकीकरण: हिंदी के मानकीकृत लिखित रूप का विकास एक वैश्विक भाषा के रूप में इसके उपयोग में सुधार कर सकता है और शिक्षार्थियों के लिए इसे समझना आसान बना सकता है। इसलिए हिन्दी को उनके स्वयं की लिपि देवनागरी में ही लिखना चाहिए और हिन्दी लिखते-बोलते समय हिन्दी के मूल

शब्दों का अधिकाधि प्रयोग करना चाहिए अन्य बोली, भाषा के शब्दों के अनावश्यक प्रयोग से बचना चाहिए ।

- भाषा संसाधन: अधिक उच्च गुणवत्ता वाले भाषा संसाधन, जैसे पाठ्यपुस्तकें, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और शब्दकोश, हिंदी सीखने वालों को भाषा तक आसानी से पहुंचने में मदद करना चाहिए।
- अंतर्राष्ट्रीय मान्यता बढ़ाएँ: व्यापार और शैक्षणिक संचार के लिए एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय मान्यता बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए।
- अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी को बढ़ावा दें: अंतरराष्ट्रीय संचार में इसके उपयोग पर अधिक जोर देते हुए हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ-साथ बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- शुद्ध हिन्दी का प्रयोग: गैर-हिन्दी भाषायीं वक्ताओं के लिए इसे अधिक सुलभ और समावेशी बनाने के लिए हिंदी में अहिन्दी बोली, भाषाओं से बचते हुए शुद्ध हिन्दी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किया जाना चाहिए।
- वैश्विक मीडिया के लिए एक्सपोजर: अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के लिए अधिक सामग्री तैयार करके हिंदी भाषा के मीडिया को वैश्विक दर्शकों के लिए अधिक सुलभ बनाया जाना चाहिए।
- वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का विकास: इन क्षेत्रों में हिंदी के उपयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए मानकीकृत वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली विकसित की जानी चाहिए।
- सांस्कृतिक कूटनीति: हिंदी संस्कृति और कला के प्रचार-प्रसार को विश्व स्तर पर भाषा को बढ़ावा देने और इसकी मान्यता में सुधार के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- राजनीतिक और सामाजिक समावेशिता: राजनीतिक या सामाजिक समस्याओ के परवाह किए बिना हिंदी को सभी के लिए एक भाषा के रूप में बढ़ावा देने के प्रयास किया जाना चाहिए ।
- धन में वृद्धि: वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा के कार्यक्रमों और संसाधनों के विकास और वितरण में सुधार के लिए अधिक धन उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

हिन्दी भाषा के वैश्वीकरण अनेक चुनौतियां होने के बाद भी निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है हिन्दी भाषा का प्रभाव विश्व में बढ़ रहा है। इंटरनेट में हिन्दी सामाग्री की उपलब्धता दिनों दिन बढ़ रही है। भारत में स्थानीय भाषा में शिक्षा देने की शिक्षा नीति से तकनीकी शब्दों का विकास हिन्दी में हो रहा है इसका ताजा उदाहरण मध्यप्रदेश सरकार द्वारा चिकित्सा की शिक्षा हिन्दी में करने का विकल्प प्रस्तुत किया है। यद्यपि यह शुरूआत है किन्तु यह सुनहरे भविष्य का दिक्दर्शन है ।

अभिभावकों को अंग्रेजी माध्यम में बच्चों को पढ़ाने की ललक को त्यागना चाहिए, अंग्रेजी को एक भाषा के रूप में पढ़ने-पढ़ाने में कोई समस्या नहीं है किन्तु अंग्रेजी माध्यम में शिक्षण के प्रचलन को अनिवार्य रूप से त्यागना होगा। [12] युवा पीढ़ी को हिन्दी के प्रभाव को बढ़ाने में आगे आना ही होगा हिन्दी को रोमन लिपि में लिखना छोड़ना ही होगा, हिन्दी में अंग्रेजी के बहुलता कर रहे प्रयोग को बंद करना ही होगा ।

संदर्भ

[1] शैला एल.क्रोचर. वैश्वीकरण और संबंध: एक बदलती हुई दुनिया की पहचान की राजनीति.रोमैन और लिटिलफ़ील्ड. (२००४). p.१०

[2] वैश्वीकरण महान है ! Archived 2005-05-29 at the वेबैक मशीनटॉम जी. के द्वारा पामर, वरिष्ठ सहकर्मी, काटो संस्थान

[3] फ्राइडमैन, थॉमस एल."संघर्ष को रोकने का डेल सिद्धांत."इमरजिन: एक पाठक.एड. बार्सले बेरियोस बोस्टन: बेडफ़ोर्ड, सेट मार्टिंस, २००८. ४९

[4] "जी नेट, कॉर्पोरेट वैश्वीकरण, कोरिया और अंतरराष्ट्रीय मामले, नोअम चोमस्की का सन वू ली के द्वारा साक्षात्कार, मासिक जूंग आंग, २२ फ़रवरी २००६". मूल से 26 फ़रवरी 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.

[5] Archived 2008-10-01 at the वेबैक मशीन

[6] "Armageddon का युद्घ, अक्टूबर, 1897 पृष्ठ 365 - 370". मूल से 5 जनवरी 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.

[7] "संग्रहीत प्रति". मूल से 12 जुलाई 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.

[8] Archived 2008-01-22 at the वेबैक मशीन ZForums, Chomsky Chat, >(2)9/11 और वैश्वीकरण के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध क्या है ?

[9] "नोएम शोमस्की वाशिंगटन पोस्ट पाठकों के साथ चेट करते हैं, वाशिंगटन पोस्ट, २४ मार्च २००६". मूल से 12 नवंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2008.

[10] स्टाइपो, फ्रांसेस्को. विश्व संघवादी घोषणा पत्र राजनीतिक वैश्वीकरण के लिए मार्गदर्शिका, ISBN 978-0-9794679-2-9,http://www.worldfederalistmanifesto.com Archived 2007-06-27 at the वेबैक मशीन

[11] हर्स्ट ई.चार्ल्स सामाजिक असमानता: रूप, कारण और परिणाम, 6 ठा संस्करण. P.91

[12] "1980 के दशक के प्रारम्भ से विश्व के सबसे गरीब लोगों ने कैसे प्रगति की है?"शाओहुआ चेन और मार्टिन रेवेलियन द्वारा. Archived 2007-03-10 at the वेबैक मशीन